घरों से बेघर हुए लोग

समस्याएं औरतों की

मणिमाला

विस्थापन की समस्या दुनिया भर में है। हर जगह लोगों को उजाड़ कर लोगों का विकास किया जा रहा है। जाहिर है उजड़ने वाला एक वर्ग होता है। विकास दूसरे का होता है। अक्सर गरीब उजड़ते हैं। अमीर बसते हैं। इसी को विकास का नाम दिया गया है। जब कभी गरीबों को बसाने की बात होती है। उनके विकास की बात आती है। इसकी थोड़ी सी जिम्मेदारी अमीरों में बांटने की बात होती है तो उसे विकास नहीं माना जाता। पिछड़ापन माना जाता है।

यही वजह है कि दुनिया भर में लोग उजड़ रहे हैं। उजड़े हुओं को बसाने की बात भी नहीं की जाती। जो ऐसी बातें करता है उसे विकास का दुश्मन मान लिया जाता है। अब तो देश का दुश्मन भी कहा जाने लगा है। फिर भी उजड़ने वालों ने अपनी आवाज बुलंद की है। यह विकास है या विनाश, यह सवाल पूछा जा रहा है। यही सवाल पूछने के लिए 26, 27 और 28 मार्च को देश भर की विस्थापित महिलाएं बड़वानी के एक गांव में इकट्ठी हुईं। गांव का नाम है सातत्तलाई। बड़वानी मध्य प्रदेश में है।

एक अनूठा सम्मेलन

करीब पांच सौ महिलाओं ने इसमें हिस्सा लिया। यह सम्मेलन अपने किस्म का अनूठा सम्मेलन रहा। अनूठा इसलिए कि ज़्यादातर महिलाएं गांवों की थीं। अनपढ़ थीं। या बहुत कम पढ़ी-लिखी थीं। फिर भी अपनी बात बड़ी सफाई

से कह रही थीं। दूसरों की बड़ी ध्यान से सुन रही थीं। चर्चा बहुत ही गंभीर हुई।

बहुत कम समय में इतनी गंभीर चर्चा मैंने पहली दफा सुनी। हालांकि देश के विभिन्न हिस्सों से बहनें आई थीं। अलग-अलग भाषा बोलने वाली। हमारे समाने भाषा कोई दीवार नहीं बनी। बड़े आराम से उन्होंने अपनी भाषा में अपनी बातें कहीं। फिर कार्यकर्ताओं ने उसका अनुवाद किया।

तीन दिनों की चर्चा से जो मुद्दे उभर कर आए उनमें सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा था विस्थापन के बावजूद औरतों की उपेक्षा। जब कभी कोई सरकार विस्थापित जनों के लिए कोई नीति बनाती है तो सिर्फ मर्दों को ध्यान में रखकर बनाती है। जबकि मर्दों के साथ सारी समस्याएं तो औरतें झेलती ही हैं। उनकी अपनी अलग समस्याएं भी होती हैं।

कड़वे अनुभव

कई औरतों ने बताया कि विस्थापन के बाद उनका सब कुछ बिखर गया। एक गांव कई टुकड़ों में बंटा। यहां तक कि एक घर भी कई भागों में बंटा। औरत का वक्त बाहर काम के बाद घर में ही बीतता है। घर टूटता है तो औरत टूटने लगती है। कुछ बनाने का सबसे ज़्यादा अहसास घर से ही जुड़ा होता है। घर उसे एक किस्म की सुरक्षा का अहसास कराता है। अपनत्व का बोध सबसे ज़्यादा घर से ही होता है।

एक घर टूटता है। नया घर बांधना पड़ता है। एक जगह उजड़ कर मर्द रोजी-रोटी की खोज में भटकते हैं। औरतों को तिनका-तिनका चुन कर घर बांधना पड़ता है। बाहर कमाना भी पड़ता है। बच्चे भी संभालने पड़ते हैं। सच्चाई तो यह है औरत एक बार उजड़ती है तो फिर बस ही नहीं पाती।

विकास या विनाश। यह सवाल पूछने के लिए सातलाई (म.प्र.) में घरों से बेघर लगभग पांच सौ औरतें इकट्ठी हुईं। यह एक अनूठा सम्मेलन रहा। अनूठा इसलिए कि ज्यादातर महिलाएं गांवों की थीं। अनपढ़ थीं। या बहुत कम पढ़ी-लिखी थीं। फिर भी अपनी बात बड़ी सफाई से कह रही थीं।

इन औरतों ने संकल्प लिया कि वे अपनी लड़ाई जारी रखेंगी। विकास के नाम पर विनाश नहीं होने देंगी।

नई जगह उनकी कोई जान-पहचान नहीं होती। अनजान जगह काम मांगने जाती हैं। ज़्यादा काम। कम दाम। यह तो आम बात है। कई दफा काम का उतना दाम भी नहीं मिलता। कई बार वे खो जाती हैं। बच्चों को पता नहीं कि मां कहां है। पति को पता नहीं होता पत्नी कहां है। मध्य प्रदेश के उजड़े हुए गांव की कई औरतें पति की मौत के बाद भी अपने को सुहागन समझती रहीं। इतना तक पता न चल सका कि उनका पति डामर ढोते हुए मारा गया।

समस्या बेटियों की

एक और बड़ी समस्या आती है बेटियों की शादी की। गांव उजड़ जाता है। परिवार बिखर जाता है। दूर-दूर तक अपना कोई नहीं होता। कौन रिश्ता दे। कौन रिश्ता ले। पढ़ाई-लिखाई का कोई इंतजाम नहीं। न ही औकात। ऐसे में जवान अविवाहित बेटियों का दुख। कितना अकेलापन। कितना बेगानापन। कितना खालीपन। न हाथ में कोई

काम। न दुख में कोई साथ। इन हालात में उनका शोषण बहुत होता है। कोई प्यार का झांसा देकर शोषण करता है। कोई जबरदस्ती करता है। कई औरतों ने बताया कि नर्मदा घाटी के कई गांवों की औरतें बाहर काम पर जाती हैं तो पेट लेकर लौटती हैं।

घाटी के ही एक गांव अंतरास की बुद्धि बहन ने आत्महत्या कर ली। उनका गांव चार बार डूबा। चार बार उन्होंने पानी उतरने के बाद फिर घर बांधा। अपना। औरों का भी। चार बार डूबे हुए गांव को बसाया। जाहिर है बांध समर्थक उनसे नाराज हो बैठे। हर बार गांव डूबता। हर बार वह बसा जो देती थी। आखिरकार उन्हें हटाने के लिए उन पर बलात्कार किया गया। तीन पुलिस वालों और एक पटेल ने। बुद्धि बहन ने 18 जनवरी को आत्महत्या कर ली। विस्थापन की इस पीड़ा से आगे और क्या होगा।

इतना सब कुछ बर्दाश्त करने के बाद भी औरतों का हौंसला नहीं टूटा है। उन्होंने सातत्तलाई में संकल्प लिया कि वे इस लड़ाई को जारी रखेंगी। विकास के नाम पर विनाश नहीं होने देंगी। वे लड़ेंगी विकास की इस धारा के खिलाफ। वे लड़ेंगी विस्थापन के खिलाफ। सबने बुद्धि बहन के साहस की कसम खाई कि वे लड़ेंगी।

□